International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रगतिशील चेतना के कवि 'नेपाली'

डा. श्याम बाबू प्रसाद
प्रधानाचार्य,
मीनापुर मध्य विद्यालय, मीनापुर, मुजफ्फरपुर

नेपाली प्रगतिशील विचारों के सच्चे जनकवि हैं। उनका काव्य लोक–आस्था और सौन्दर्य का काव्य है और वे नये समाज के निर्माण के लिए निरंतर पहल करने वाले रससिद्ध कवि हैं। वे युवाशक्ति को दिशा देने और उसे रचनात्मक ऊर्जा के रूप में रूपान्तरित करने वाले कवि हैं। अपने प्रथम काव्य–संग्रह 'उमंग' की कविताओं में ही वे अपनी प्रगतिशील चेतना का साक्ष्य दे देते हैं। वे कहते हैं–

''हैं जीवन हम, हैं यौवन हम, हैं यौवन के उन्माद हमीं
जो हिला–डुला दे दुनिया को उस विप्लव के सिंहनाद हमीं
जिस पर अवलंबित क्रान्ति प्रबल वह पत्थर की बुनियाद हमीं
जिसमें है साहस, शक्ति भरी वह, ब्रह्मा की ईजाद हमीं।''[1]

नेपाली का काव्य प्रेम का काव्य है, सद्भाव का काव्य है और प्रतिगामी शक्तियों को चुनौती देने का काव्य भी। मानवीय प्रेम के प्रसार और उसकी रक्षा के लिए कवि किसी भी तत्त्व का, किसी भी प्रतिरोध का समाना करने के लिए न केवल तैयार है, बल्कि मानव की शक्ति पर उसे गर्व भी है। इसलिए वह कहता है–

''सर्वनाश हो, प्रलय, निधन हो, होकर हमें करेगा क्या
ऐसी बन्दर घुड़की से भी मानव–हृदय डरेगा क्या
चलने का अभ्यस्त पाँव यह पथ से कभी टरेगा क्या
ईश्वर का यह अमर अंश रे छन में कहीं मरेगा क्या।''[2]

नेपाली का यथार्थबोध अत्यन्त गहरा है। वे अपने समय की तल्ख हकीकतों से परिचित हैं और विषमता के हर रूप पर चोट करते हैं। दिल्ली के वैभव और श्रमिक वर्ग के गहरे संघर्ष को स्वर देते हुए कवि का कथन है–

''बनी देहली नई, किनारे लगीं, बत्तियाँ, रौनक छाई,
रुपए के चौंसठ पैसे हैं, ढली अठन्नी, आना, पाई।
रेल चल गई, मोटर दौड़ी, शाम–सुबह नित चिट्ठी आई,
हाँक ठेले बिस्तर ढोए, भूखे लेटे–बीन बजाई।
खा–खा के मरती है दुनिया कितने बे–खाए जीते हैं।
बोलो बाबा, अलख निरंजन, जाड़ा है, बोरे सीते हैं।''[3]

'रागिनी' का कवि प्रेम की रागिनी ही नहीं छेड़ता अपितु विद्रोह का स्वर भी मुखर करता है। वह अन्याय की लंका को जलाकर राख कर देना चाहता है–

''मरण–घड़ी घड़ियाल बजा, उठ विद्रोही रच सुघड़ चिताऋ
इधर खींच माचिस की सींकें, उधर सुना अपनी कविता।
जग के क्षणिक बुलबुले फूटें, चिर–विप्लव का राग जगेऋ
अट्टहास कर विग्रह, सोने की लंका में आग लगे।''[4]

नेपाली की प्रगतिशील चेतना 'पंचमी' की कुछ कविताओं में भी व्यक्त हुई है। 'पंचमी' के मंगलाचरण में कवि की प्रार्थना वस्तुतः लोकमंगल का विधान है–

''देव, अमर तुम महिमा–मंडित
जग में मानव कुण्ठित–दण्डित
उसके कर में एक दीप था
वह भी आज नियति से खंडित

जागो देव, तिमिर पर जग के आज बहाओ ज्योतिर्धारा।
युग–मानव की मति में बोलो
संघ–संघ की गति में बोलो
कविता जाग रही तुम जागो
जीवन की जागृति में बोलो
फूटो तुम कवि की वाणी से, तोड़ो तुम पत्थर की कारा।''[5]

'नीलिमा' में कवि सामाजिक वैषम्य का न केवल यथार्थ चित्राण करता है, बल्कि दलितों, शोषितों के उत्थान की मंगलकामना भी करता है। वह सामाजिक समरसता चाहता है–

''कहते हैं यह युग नवीन है, बहुत हो रही जग की उन्नति,
नई रौशनी फैल गयी है, नई हो गई है जग की मति;
ज्ञान बढ़ा विज्ञान चल रहा, अब जीवन की उन्नति करने,
नवयुग का संदेश प्राप्त कर, बहुत प्रभावित है अब संसृति।
कहते हैं, सब सभ्य हो रहे, सीख रहे हैं जीना सुख से !
अलग हो रहा है मानव का, जीवन अब जीवन के दुख से!
किन्तु परिस्थिति में अन्तर है, वह आखिर है तो गुलाम ही
सब कुछ मिट्टी कर देता है, एक हमारा पतित काम ही;
ऊँचे–ऊँचे महल और भी, ऊँचे हों आपत्ति नहीं कुछ
किन्तु जरूरी है क्यों, उजड़े इन महलों के लिये ग्राम ही?
आज जल रही हैं झोपड़ियाँ, देख रहे हैं महल तमाशा।
उनकी हँसी और दिलचस्पी, इनके आँसू और निराशा।''[6]

'नवीन' में नेपाली नवीन समाज के निर्माण के लिए जन–सामान्य को उद्‌बोधित करते हैं। इसके लिए वे नवीन कल्पना पर बल देते हैं–

''अब घिस गईं समाज की तमाम नीतियाँ
अब घिस गईं मनुष्य की अतीत रीतियाँ
हैं दे रही चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ
निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो
तुम कल्पना करो।''[7]

नेपाली को विश्वास है कि युवाशक्ति समतामूलक समाज का निर्माण करेगी–

''युवक बसायेंगे हिलमिल कर एक नया संसार
तरुण बनायेंगे रच–रचकर एक नया संसार
एक नया श्रृंगार सृष्टि का
एक नया संसार दृष्टि का
एक नया जीवन का घेरा
एक नया मानव का डेरा
एक नया वैभव का फेरा
नया उजाला, नया अँधेरा
जगती की प्राचीन बीन में नये सजेंगे तार
नये बजेंगे तार।।''[8]

कवि शोषण से समाज को मुक्त करना चाहता है। अपनी सामाजिक संरचना से असंतुष्ट होकर वह जन जागरण की आकांक्षा व्यक्त करता है–

''अब समाज की नवीन धारणा बनी
हैं लुट रहे गरीब और लूटते धनी
सम्पत्ति हो समाज के न खून से सनी
यह आँच लग रही मनुष्य के शीर को
तुम आँच में ढलो नवीन आँच में ढलो
तुम आँच में ढलो।''[9]

उसे विश्वास है कि नया संसार शोषण–मुक्त होगा, भेद–मुक्त होगा, द्वेष और क्लेश–मुक्त होगा क्योंकि–

''सामाजिक पापों के सिर पर चढ़कर बोलेगा अब खतरा
बोलेगा पतितों–दलितों के गरम लहू का कतरा–कतरा
होंगे भस्म अग्नि में जलकर धरम–करम औ' पोथी–पत्रा
और पुतेगा व्यक्तिवाद के चिकने चेहरे पर अलकतरा
सड़ी–गली प्राचीन रूढ़ि के भवन गिरेंगे, दुर्ग ढहेंगे
युग प्रवाह पर कटे वृक्ष–से दुनिया–भर के ढोंग बहेंगे
पतित–दलित मस्तक ऊँचाकर संघर्षों की कथा कहेंगे
और मनुज के लिये मनुज के द्वार खुले–के–खुले रहेंगे।''[10]

इस प्रकार नेपाली–काव्य अपनी प्रगतिशील दृष्टि के कारण भी महत्त्वपूर्ण है। नेपाली की प्रगतिशील चेतना किसी वाद की परिणति नहीं है, वह कवि की सामाजिक मंगलाकांक्षा और मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था की देन है। नेपाली परम्परावादी नहीं है किन्तु परम्परा के सनातन मूल्यों की प्रासंगिकता पर वे विमर्श करते हैं और नये समाज, समतामूलक समाज के निर्माण के लिए रचनात्मक पहल भी।

संदर्भ

1. 'उमंग', पृ. 102.
2. वही, पृ. 41.
3. 'रागिनी', पृ. 37–38.
4. वही, पृ. 18.
5. 'पंचमी', पृ. 2.
6. 'नीलिमा', पृ. 69.
7. 'नवीन', पृ. 01.
8. वही, पृ. 23.
9. वही, पृ. 74.
10. वही, पृ. 29.